अनुवाद– डॉ रम्या बालन के

मलायलम कविता: केले का पेड़ – चङङम्पुषा कृष्ण पिल्लइ

चङङम्पुषा कृष्ण पिल्लइ (1911–1948) मलयालम् में स्वच्छन्दतावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं । उन्होंने संगीत और काव्य का अद्भुत मेल किया । उनकी कविता का प्रमुख स्वर प्रेमजनित भावनात्मक संघर्ष है । सामन्ती दंभ एवं विश्वासघात के विरुद्ध उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से मोर्चा खोल रखा था । जीवन के विषमताबोध से उनका काव्य निर्मित हुआ है, जिसे वे कोरी नैतिकता या आदर्शवाद की अपेक्षा संघर्ष में परिणत करते हैं । मलयालम आलोचना में उनके सन्दर्भ में कहा जाता है कि उन्होंने अपने काव्य में मनोभावों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति की अपेक्षा बौद्धिक नियंत्रण से काम लिया है, जिससे उनकी कविताएँ कुछ अधिक ही तर्कपूर्ण हो गई हैं, भावनात्मक की अपेक्षा । खैर, यह अपने किस्म का स्वच्छन्दतावाद था, जो प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर था । अतीत की अपेक्षा वर्तमान को अधिक चित्रित करता था । निष्कपटता, सामान्य जन–जीवन से लगाव, संघर्ष की चेतना, संगीतमयता, कोमलकान्त पदावली के कारण 20 वर्ष की उम्र तक ही वे केरल में साहित्यकार के रूप में सामन्य पाठकों में काफी लोकप्रिय रचनाकार बन गए थे । प्रेम और सामाजिक संघर्ष उनकी कविताओं का मुख्य कथ्य है । उन्होंने अपने एक साथ कवि इटप्पल्ली राघवन पिल्लइ के प्रेम–संघर्ष पर कविता लिखी, जिन्होंने प्रेम के कारण आत्महत्या कर ली थी, यह केरल का अत्यधिक प्रसिद्ध शोकगीत सिद्ध हुआ । प्रेम के सामाजिक पक्ष को उन्होंने इसमें बड़ी कुशलता से उभारा है । वाष्पांजलि, मोहिनी, संकल्प क्रान्ति, पाटुन्न पिशाचु, हेमन्तचन्द्रिका, तिलोत्तमा, मनस्विनी उनके काव्यसंग्रह हैं । उन्होंने अधिकतर लम्बे गीतकाव्य लिखे हैं ।

प्रस्तुत कथात्मक कविता भारत में सामन्तवाद से लड़नेवाली, उसके चरित्र, अन्यायों–अत्याचारों का भावनात्मक वर्णन कर, प्रतिरोध के लिए लड़नेवाली आरंभिक कृतियों में से एक है । एक ऐसा समय भी था, जब केरल में जमींदार या उसके शोहदों के अतिरिक्त अपने घर के पीछवाड़ें में फल–सब्जी भी नहीं उगा सकते थे और उसमें भी यदि कोई दलित जाति से हो तो, कहने ही क्या । इस कविता में ऐसे ही एक पुलया (एक दलिता जाति) परिवार की कहानी है । हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी अपना और अपने बच्चों का पेट न भर पाने की स्थिति

में मलया ने अपने घर के पिछले हिस्से में एक केले का पेड़ लगाया, उसे बच्चे की तरह पाला, उससे उम्मीदें लगाई, आशाएँ–आकांक्षाएँ–सपने पाले और अन्त में प्रथा के अनुसार जमींदार का हुक्म आया । अपने बच्चे जैसे उसी केले के पेड़ को उसने...। सम्पूर्ण कविता केवल कथा ही नहीं कहती, बल्कि कथा के माध्यम से इन्सान को इन्सान होने का अहसास दिलाती है । इसे गुलाम होने की सूचना मात्र नहीं देती, मुक्ति का रास्ता बताती है । अपने भविष्य के लिए चिन्ता करना सीखाती है, आनेवाली पीढ़ी के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है । ट्रैजिक कृतियों को कई बार निराशा उत्पन्न करनेवाली माना जाता है, ऐसा अक्सर नहीं होता है । प्रस्तुत कविता ट्रैजिक कृति होते हुए भी संघर्ष चेतना से परिपूर्ण है । अनुवाद में कई बार वह तीव्रता नहीं आ पायी होगी या कई त्रुटियाँ रह गई होंगी, यह अनुवादक की अपूर्णता है, जिसे पाठक सूचित करेंगें, इस उम्मीद के साथ, प्रस्तुत है मलयालम नवजागरण का यह काव्यमय दस्तावेज़.... – अनुवाद

बरसात के मौसम में
अपने आँगन में
मलया[1] पुलयन ने
एक पौधा लगाया केले का

मन में आशाओं के अंकुर
ऐसे उगने लगे
जैसे उन पौधों पर
केले फलने लगे

जैसे उनके प्यारे बच्चों की तरह
बिदा हुई बरसात, आ गया बसंत
खिल गये तन मन और आसमान

1.केरल की एक दलित जाति । अन्य प्रदेशों की ही तरह यहां भी दलित जाति के व्यक्तियों के नाम से पूर्ण उनकी जाति का नाम जोड़ा जाता है । यहां व्यक्ति का नाम पुलयन है । - अनु.

गाने लगी कोयल मलयन के मन की

खिल गया पेड़ और बहने लगी हवा सुंगंधी

मलयन का आँगन भी भर गया फूलों से

मेहनत के दिन आ गये

जोतना है हल साँझ तक

लेकिन भूलता नहीं कोई

पेड़ को केले के

सींचना

दिन–ब–दिन पालने से

वह बढ़ता गया यूँ ही

यादव के मन में उमडे

अनुराग–सा

खेलते रहे बच्चे दोपहर में

उसकी छाये में

खाली पेट

पिघलेगा किसी का हृदय भी

उन्हें देखने से

हँसी और खेल में

कभी झगड़ते है वह

आँखें भर आयेंगी

दृश्य देखने से

किसी के हृदय में

आयेगा दया का गीला स्पर्श
कौन जानेंगे इनका दुख
जो निस्सहाय, अनाथ और है अधनंगा
इनकी गरीबी का अंत होगा कब
अदालत और नीति न्यायों का भरमार है यहाँ
लेकिन जगह नहीं इन गरीबों को अपने पैर रखने के लिए जहाँ
वक्त नहीं दुनिया को इन्हें देखने तक का
नहीं है कोई दफ़नाने तक का
अगर यह मरेंगे यह बिना प्यार से
ऐ मदमाधुरी तुम अपनी शान में
और उत्सव में मज़े लेते रहो ।

कहने लगा माधवन
इस केले का फल कितना स्वादिष्ट होगा
परिहास से कहा तेवन ने
फल आया नहीं, लेकिन मूँह में पानी इसके आने लगा
नाराज़ हुई नीली भी, कहा बाबू ने
बेचेंगे इस केले को
चावल के लिए
गुस्से में कहा करिवल्लोन ने
तुम्हारी काली ज़बान को बंद रखो ।

तब शैतानी करने लगी नीली
कहा कि चुराउँगी मैं सारे केले
कहते हैं तब करिवल्लोन
यह तो तेरा अतिमोह है।

गुज़रते रहे दिन, इस
केले के पौधे के नीचे
हुआ यह महावृक्ष–सा आरजूँओं सा दिन–ब–दिन
सोंच की तरह वह पेड़ भी
फूल फलने लगे जल्द ही
उतनी गहरी थी इनकी इच्छा भी

फला फूला वह पेड एक दिन
जैसे ही आया ओणम उस घर में
फिर कभी झगडे नहीं करिवल्लोन नीली से
पता है उसे नीली नीरी चोर है
इसीलिए मिलाया हाथ उससे करिवल्लोन ने
मिलेगा आधे केले उसे भी
करिवल्लोन बने प्यारे नीली के
और माधेवन बने केलन के साथी
बचपन ही ऐसा समय है

जैसे छाया से आती है चाँदनी
बच्चों की खुशियाँ देखकर

भर आया अषकी का सीना भी
केले काटकर पकाने[2] का

मन में लगा मलयन के
ऐसे ही तौफे तो हम गरीब
अपने बच्चों को सम्मानित कर सकते हैं
दम तोड़ मेहनत से
भरते नहीं पाते आधा पेट भी
सोते हैं बच्चे मालिक के जब
गरम दूध पीकर
तब दोपहर की धूप में घूमते हैं
यह अपना पेट भरने के लिए
मिलता है
इन्हें पानी पडोसी नाले में
अपनी प्यास बुझाने के लिए
ऐ, दुनिया तुम इतनी निर्दय हो
विचरते रहो तुम अपनी भावनाओं में
घूमते रहो तुम अपनी कल्पनाओं में
सीने तोड़कर मर जाएंगे वह
बेमौत मरेंगे यहीं
इनका खून पीकर वह
अपने हक की बात करते हैं
मत देखो, मत सुनो यह सब

[2].केरल में कच्चे केले की सब्जी बनाई जाती है ।

तुम अपने गुलिस्तां में खो जाओ
छुआ जब मलयन ने उस पेड को
बिजली कडकी सीने में
लगा उसे जैसे प्रतिकंपन
हो रहा है क्षितिज में भी

डूब गया सूरज भी वैसे ही
दिन की अंतडियाँ और खून पीकर
खड़ा रहा मलयन कटपुतली की तरह
गिर गया खून का एक बिंदु फिर
जैसे जले उसके गाल पर प्रतिक्षण
असहनीय ताप से
बड़ी खुशी से खेलते रहे बच्चे
उसके आस–पास
जैसे पत्रहीन, खालहीन पेडों को
घेरेते हुए लता सी
उनकी खुशी देखते हुए
सामना नहीं कर पाया उन आँखों का
चूमने लगा करुवल्लोन गाल नीली का
जैसे हृदय में जगी नयी आस से
माध्वन को तिरछी नज़र से देखा केलन ने
खिल गयी हँसी उसके अधरों पर
मलयन की आँखों से गिरते रहे आँसू
यूँ ही

छा गया अंधेरा मलयन की आँखों में
धोखे से बहने लगी हवा यूँ ही
बढ़ने लगे रोदन झोंपडी में
जानता नहीं क्या रिश्ता है उसके दुख का ?
पाल पोसकर बढाया जिस पेड़ को
काटा गया उसका गला
अनजान बच्चे खेलते रहे
मलयन का मुँह जैसे उतरने लगे
केला कंधे पर लेकर वह खड़ा रहा यूँ ही
बहुत देर तक
अन्याय, हमले और अत्याचार बढ़ते रहे इन पर
जानते नहीं वह छल कपट
इस निर्दयी कपटी दुनिया में
निस्वार्थ सेवा, निर्दय मार पीट
निस्सहायता, हाय यही नित्य दुख है !

निराशा है जीवन भर
लेकिन असहनीय है नीति न्याय का भार
प्रतिरोध करना होगा इन सबके विरोध में
तुम आनेवाली पीढ़ियों को

शिला की तरह खड़ा रहा
मलयन पेड़ कंधे पर लेकर

हवा में बहने लगे कुछ अक्षर

सिसकियाँ लेते हुए

आज्ञा मिली है ज़मीनदार की

ले जाना है पेड़ को वहाँ

रो मत मेरे यारों

आज्ञा है ज़मीनदार की

ले जाता हूँ इसे मैं

लगा दूँगा दूसरा पेड़, कहकर

चलने लगा मलयन

पीछे उठने लगा आर्तनाद

निरालम्ब, निस्सहाय, थके हारे इन लोगों का

दुख कौन जानेंगे?

धनी लोगों से बने हुए नीति न्यायों को

कहना नहीं है क्या कुछ भी....?

मैं वापस लेता हूँ सब कुछ.....

सहायक प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, श्री नारायणा कॉलेज, कोट्टाड, कण्णूर (केरल)–670007

ईमेलः ramyamhere@gmail.com